CERTIFICATE OF ACCEPTANCE

KNOWLEDGE SCHOLAR

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

eISSN-2394-5362 Impact Factor (SJIF) - 4.567

This is to certify that our Editorial and Review Board Accepted the Research Paper of

डॉ.ललिता राठोड , हिंदी विभाग , बलभीम महाविद्यालय, बीड

Topic: दसवें दशक के उपन्यास

Your Research paper will be published in Vol. 03, Issue. 06 (Nov.— Dec. 2016) i.e. Knowledge Scholar -An International Peer Reviewed E-Journal of Multidisciplinary Research an Online Journal.

KNOWLEDGE PUBLISHING, PRINTING AND DISTRIBUTION HOUSE
H. No. 1-27-15, Collector Office Road, Aurangabad. Maharashtra State. India.
Website: - http://www.knowledgepublishinghouse.com

Editor-in-Chief

"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
eISSN NO. 2394-5362
Volume: 03, Issue: 06, Nov. – Dec. 2016
Impact Factor (SJIF) - 4.567

दसवें दशक के उपन्यास

डॉ.ललिता राठोड

हिंदी विभाग
बलभीम महाविद्यालय, बीड

साहित्य की विधाओं में उपन्यास विधा का विशेष महत्व रहा है। जीवन का यथार्थ चित्रण सशक्तता के साथ चित्रित करने में इस विधा को अत्याधिक सफलता प्राप्त हुई है। उपन्यास के कथ्य एवं शिल्प के आज विविध रुप दिखायी देते हैं। इन विविध रुपों के कारण उपन्यास विधा का विकास तो हुआ ही है, साथ ही साथ साहित्य की यह केंद्रीय विधा बनती जा रही है।

हिंदी उपन्यास की दृष्टि से दसवॉ दशक अनेक दृष्टियों से विशेष रहा है। एक तो इस काल में विविध प्रवृत्तियों के आधार पर अनेक उपन्यास लिखें गए है। उत्तर आधुनिकता, सूचना कांति का विस्फोट सांम्प्रदायिकता का उफान, दलितों की अभिव्यक्ति, आर्थिक उदारीकरण और अपसंस्कृति के प्रसार के कारण दसवें दशक में अनेक रचनाकार उपन्यास साहित्य विधा के प्रति अत्यंत गंभीर रहे हैं। इसी गंभीरता के कारण दसवें दशक में अनेक उत्कृष्ठ औपन्यासिक कृतियों की निर्मिती हुई है।

इस कालखंड में सांप्रदयिकता उपन्यास, व्यवस्था विरोधी उपन्यास, दलित विमर्श के उपन्यास, शहरी जीवन, मध्यवर्ग से संबंधित एवं निम्नवर्ग से संबंधित उपन्यास, राजनीतिक उपन्यास एवं ग्रामांचल पर आधारित उपन्यास अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं। यही कारण है कि दसवें दशक में उपन्यास विधा का प्रभुत्व बढ़ा हुआ है। इसलिए यह कहा जाता है कि, दसवॉ दशक उपन्यास का माना जाता है। यह इसलिए कहा जाता है कि, दसवें दशक के जटिल जीवन, को साकार करने में उपन्यास विधा अत्यंत सक्षम रही है। इसी सक्षमता के कारण ही इस अवधि के उपन्यासों ने समसामयिक जीवन की यथार्थता को अत्यंत सूक्ष्म रुप में अंकित किया है।

साम्प्रदायिक भयानकता को चित्रित करनेवाले उपन्यास भगवानसिंह का 'उन्माद' नासिरा शर्मा का 'जिंदा मुहावरे' कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान' और अब्दुल बिस्मील्ला का 'मुखडा क्यों देखे' इस काल के यह अत्यंत सशक्त उपन्यास है। पुरे सामर्थ्य के साथ इन उपन्यासों में साम्प्रदायिकता अंकन हुआ है।